Bihar Board Class 10th Hindi Notes गद्य Chapter 11 नौबतखाने में इबादत

नौबतखाने में इबादत लेखक परिचय

यतींद्र मिश्र का जन्म सन् 1977 में अयोध्या, उत्तरप्रदेश में हुआ । उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से हिंदी भाषा और साहित्य में एम० ए० किया । वे साहित्य, संगीत, सिनेमा, नृत्य और चित्रकला के जिज्ञासु अध्येता हैं । वे रचनाकार के रूप में मूलतः एक कवि हैं । उनके अबतक तीन काव्य-संग्रह : 'यदा-कदा', 'अयोध्या तथा अन्य कविताएँ', और 'ड्योढ़ी पर आलाप' प्रकाशित हो चुके हैं । कलाओं में उनकी गहरी अभिरुचि है । इसका ही परिणाम है कि उन्होंने प्रख्यात शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी के जीवन और संगीत साधना पर एक पुस्तक 'गिरिजा' लिखी । भारतीय नृत्यकलाओं पर विमर्श की पुस्तक है 'देवप्रिया', जिसमें भरतनाट्यम और ओडिसी की प्रख्यात नृत्यांगना सोनल मान सिंह से यतींद्र मिश्र का संवाद संकलित है। यतींद्र मिश्र ने स्पिक मैके के लिए 'विरासत 2001' के कार्यक्रम के लिए. रूपंकर कलाओं पर केंद्रित पत्रिका 'थाती' का संपादन किया है। संप्रति, वे अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'सहित' का संपादन कर रहे हैं । वे साहित्य और कलाओं के संवर्धन एवं अनुशीलन के लिए एक सांस्कृतिक न्यास 'विमला देवी फाउंडेशन' का संचालन 1999 ई० से कर रहे हैं।

यतींद्र मिश्र ने रीतिकाल के अंतिम प्रतिनिधि कवि द्विजदेव की ग्रंथावली का सह-संपादन भी किया है। उन्होंने हिंदी के प्रसिद्ध कवि कुँवरनारायण पर केंद्रित दो पुस्तकों के अलावा हिंदी सिनेमा के जाने-माने गीतकार गुलजार की कविताओं का संपादन 'यार जुलाहे' नाम से किया है। यतींद्र मिश्र को अबतक भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद् युवा पुरस्कार, राजीव गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, रजा पुरस्कार, हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार, ऋतुराज सम्मान आदि कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी, नयी दिल्ली और सराय, नई दिल्ली की फेलोशिप भी मिली है।

'नौबतखाने में इबादत' प्रसिद्ध शहनाईवादक भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर रोचक शैली में लिखा गया व्यक्तिचित्र है । इस पाठ में बिस्मिल्ला खाँ का जीवन – उनकी रुचियाँ, अंतर्मन की बुनावट, संगीत की साधना आदि गहरे जीवनानुराग और संवेदना के साथ प्रकट हुए हैं ।

नौबतखाने में इबादत Summary in Hindi

पाठ का सारांश

सन् 1916 से 1922 के आसपास की काशी। पंचगंगा घाट स्थित बालाजी विश्वनाथ मंदिर . की ड्योढ़ी। ड्योढ़ी का नौबतखाना और नौबतखाने से निकलनेवाली मंगलध्वनि।।

अमीरूद्दीन अभी सिर्फ छह साल का है और बड़ा भाई शम्सुद्दीन नौ साल का। अमीरूद्दीन को पता नहीं है कि राग किस चिड़िया को कहते हैं। और ये लोग हैं मामूंजान वगैरह जो बात-बात पर भीमपलासी और मुलतानी कहते रहते हैं। क्या बाजिब मतलब हो सकता है इन शब्दों का इस" लिहाज से अभी उम्र नहीं है अमीरूद्दीन की; जान सके इन भारी शब्दों का बजन कितना होगा।

अमीरूद्दीन का जन्म डुमराँव, बिहार के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ है। 5-6 वर्ष डुमराँव में बिताकर वह नाना के घर, ननिहाल काशी में आ गया है। शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनवाई और बजूलनवाई ने उकेरी है। इसे संगीत शास्त्रांतर्गत

https://www.evidyarthi.in/

‘सुषिर-वाद्यों’ में गिना जाता है। अरब देश में फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी नरकट या रीड) होती है को ‘नय’ बोलते हैं। शहनाई को ‘शाहनय अर्थात् ‘ सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है।

शहनाई की इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। बिस्मिला खाँ और शहनाई के साथ जिस मुस्लिम पर्व का नाम जुड़ा है, वह मुहर्रम है। आठवीं तारीख उनके लिए खास महत्त्व की है। इस दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते हैं व दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौटा बजाते जाते हैं।

बचपन की दिनों की याद में वे पक्का महाल की कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान व गीताबाली और सुलोचना को ज्यादा याद करते हैं। सुलोचना उनकी पसंदीदा हीरोइन रही थीं।

अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं, थोड़ी देर ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता है और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है।

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित है। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य-विश्वनाथ हैं। काशी में विस्मिल्ला खाँ है। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं, बड़े रामदास जी है, मौजुद्दीन खाँ हैं व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है।

आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।” खाँ साहब मुस्कराए। लाड़ से भरकर बोले “धत। पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया’ पे मिला है, लगिया पे नाहीं।

नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त 2006 को संगीत रसिकों की हार्दिक सभा से हमेशा के लिए विदा हुए खाँ साहब।

शब्दार्थ

- ड्योढ़ी : दहलीज
- नौबतखाना : प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान
- रियाज : अभ्यास
- मार्फत : द्वारा
- शृंगी : सींग का बना वाद्ययंत्र
- मुरछंग : एक प्रकार का लोक वाद्ययंत्र
- नेमत : ईश्वर की देन, वरदान, कृपा
- सज़दा : माथा टेकना
- इबादत : उपासना
- तासीर : गुण, प्रभाव, असर
- श्रुति : शब्द-ध्वनि
- ऊहापोह : उलझन, अनिश्चितता
- तिलिस्म : जादू
- गमक : खुशबू, सुगंध

https://www.evidyarthi.in/

- अजादारी : मातम करना, दुख मनाना
- बदस्तूर : कायदे से, तरीके से
- नैसर्गिक : स्वाभाविक, प्राकृतिक
- दाद : शाबाशी, प्रशंसा, वाहवाही
- तालीम : शिक्षा
- अदब : कायदा, साहित्य
- अलहमदुलिल्लाह : तमाम तारीफ ईश्वर के लिए
- जिजीविषा : जीने की इच्छा
- शिरकत : शामिल होना
- वाजिब : सही, उपयुक्त
- मतलब : अर्थ
- लिहाज : शिष्टाचार, छोटे-बड़े के प्रति उचित भाव
- गोया : जैसे कि, मानो कि
- रोजनामचा : दैनंदिन, दिनचर्या
- विग्रह : मूर्ति
- कछार : नदी का किनारा
- उकेरी : चित्रित करना, उभारना
- संपूरक : पूरा करने वाला, पूर्ण करने वाला
- मुराद : आकांक्षा, अभिलाषा
- दुश्चिंता : बुरी चिंता
- बरतना : बर्ताव करना, व्यवहार करना
- सलीका : शिष्ट तरीका
- गमजदा : गम में डूबा
- सुकून : शांति, आराम
- जुनून : उन्माद, सनक
- खारिज : अस्वीकार करना
- आरोह : चढ़ाव
- अवरोह : उतार
- आनंदकानन : ऐसा बागीचा जिसमें आठों पहर आनन्द रहे
- उपकृत : उपकार करना, कृतार्थ करना
- तहजीब : संस्कृति, सभ्यता
- सेहरा-बन्ना : सेहरा बांधना, श्रेय देना
- नौहा : शहनाई
- सरगम : संगीत के सात स्वर (सा रे ग म प ध नी)
- नसीहत : शिक्षा, उपदेश, सीख
- तहमद : लुंगी, अधोवस्त्र
- शिद्दत : असरदार तरीके से, जोर के साथ
- सामाजिक : सुसंस्कृत
- नायाब. : अद्भुत, अनुपम
- जिजीविषा : जीने की लालसा

https://www.evidyarthi.in/